अब्दुल बारी मेमोरियल कॉलेज, जमशेदपुर
इंटरमीडिएट, द्वितीय वर्ष (वाणिज्य एवं कला)
विषय - 'हिन्दी कोर' (गद्य भाग)
पाठ का नाम - श्रम-विभाजन और जाति प्रथा
लेखक - बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर

(लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर)

प्रश्न 1 "आंबेडकर की कल्पना का समाज कैसा होगा?

उत्तर - आंबेडकर का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भाईचारे पर आधारित होगा। सभी को विकास के समान अवसर मिलेंगे तथा जातिगत भेदभाव का नामोनिशान नहीं होगा। समाज में कार्य करने वाले को सम्मान मिलेगा।

प्रश्न 2 मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर होती है?

उत्तर - मनुष्य की क्षमता निम्नलिखित बातों पर निर्भर होती है -

(i) जाति-प्रथा का श्रम-विभाजन अस्वाभाविक है।
(ii) शारीरिक वंश-परंपरा के आधार पर।
(iii) सामाजिक उत्तराधिकार अर्थात् सामाजिक परंपरा के रूप में माता-पिता की प्रतिष्ठा, शिक्षा, ज्ञानार्जन आदि उपलब्धियों के लाभ पर।
(iv) मनुष्य के अपने प्रयत्न पर।

प्रश्न 3 लेखक की दृष्टि में लोकतंत्र क्या है?

उत्तर - लेखक की दृष्टि में लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति नहीं है। वस्तुतः यह

सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति और समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इसमें यह आवश्यक है कि अपने सदस्यों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो।

प्रश्न- आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भ्रातृत्व' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है अथवा नहीं? आप इस 'भ्रातृत्व' शब्द से कहाँ तक सहमत हैं? यदि नहीं, तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे?

उत्तर- आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भ्रातृत्व' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है। लेखक समाज की बात कर रहा है और समाज स्त्री-पुरुष दोनों से मिलकर बना है। उसने आदर्श समाज में हर आयुवर्ग को शामिल किया है। 'भ्रातृत्व' शब्द संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ है — भाईचारा। यह सर्वथा उपयुक्त है। समाज में भाईचारा के सहारे ही संबंध बनते हैं। कोई व्यक्ति एक-दूसरे से अलग नहीं रह सकता। समाज में भाईचारे के कारण ही कोई परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचता है।

प्रश्न 7 आर्थिक विकास के लिए जाति - प्रथा कैसे बाधक है?

उत्तर - भारत में जाति - प्रथा के कारण व्यक्ति को जन्म के आधार पर मिला पेशा ही अपनाना पड़ता है। उसे विकास के समान अवसर नहीं मिलते। जबरदस्ती थोपे गए पेशे में उनकी अरुचि हो जाती है और वे काम को टालने या कामचोरी करने लगते हैं। वे एकाग्रता से कार्य नहीं करते। इस प्रवृत्ति से आर्थिक हानि होती है और उद्योगों का विकास नहीं होता।

प्रश्न 7 डा० आंबेडकर 'समता' को कैसी वस्तु मानते हैं तथा क्यों?

उत्तर - डा० आंबेडकर 'समता' को कल्पना की वस्तु मानते हैं। उनका मानना है कि हर व्यक्ति समान नहीं होता। वह जन्म से ही सामाजिक स्तर के हिसाब से तथा अपने गुणों के कारण भिन्न और असमान होता है। पूर्ण समता एक काल्पनिक स्थिति है, परंतु हर व्यक्ति को अपनी क्षमता को विकसित करने के लिए समान अवसर मिलने चाहिए।

प्रश्न 7 "जाति और श्रम-विभाजन में बुनियादी अंतर क्या है? 'श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा' के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर- जाति और श्रम-विभाजन में बुनियादी अंतर यह है कि -

(i) जाति-विभाजन, श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिकों का भी विभाजन करती है।

(ii) सभ्य समाज में श्रम-विभाजन आवश्यक है परंतु श्रमिकों के वर्गों में विभाजन नहीं है।

(iii) जाति-विभाजन में श्रम-विभाजन या पेशा चुनने की छूट नहीं होती जबकि श्रम-विभाजन में ऐसी छूट हो सकती है।

(iv) जाति-प्रथा विपरीत परिस्थितियों में भी रोज़गार बदलने का अवसर नहीं देती, जबकि श्रम-विभाजन में व्यक्ति ऐसा कर सकता है।